रिकॉर्डः– दूर देश का रहने वाला... ओमशांति प्रातः क्लास 10/4/67

रूहानी मीठे–2 बच्चे जानते हैं कि फिर से माना कल्प–2 के बाद, इसको कहा जाता है फिर से दूर देश का रहने वाला आया देश पराये। यह सिर्फ उस एक के लिए ही गायन है। उनको ही सभी याद करते हैं। वो है विचित्र। उनका कोई चित्र नहीं है। ब्र०वि०शं० को देवता कहा जाता है। शिव भगवानोवाच्य कहा जाता है। वो रहते हैं परमधाम में। उनको सुखधाम में कभी बुलाते नहीं हैं। वो आते ही संगम पर। यह तो बच्चे जानते ही हैं कि सतयुग में सारे विश्व पर तुम पुरुष..... रहते हो। मध्यम, कनिष्ट कहाँ नहीं होते। उत्तम ते उत्तम पुरुष यह ल०ना० हैं। इनको ऐसा बनाने वाला श्री–2 शिवबाबा कहेंगे। श्री–2 उस शिवबाबा को ही कहा जाता है। आजकल तो सन्यासी आदि भी अपने को श्री–2 कह देते हैं। तो बाप ही आकर उस सृष्टि को पुरुषोत्तम बनाते हैं। सतयुग में सारी सृष्टि में उत्तम ते उत्तम मनुष्य रहते हैं। उत्तम से उत्तम तथा कनिष्ट से कनिष्ट का अर्थ इस समय तुम समझते हो। कनिष्ट मनुष्य आप ही निचाई दिखाते हैं। अब तुम समझ सकते हो कि हम क्या थे, अब क्या बन रहे हैं। हम पापात्मा, पतित थे। अब फिर से हम स्वर्गवासी, पुरुषोत्तम बन रहे हैं। यह है ही संगमयुग। तुमको खातरी है कि इस पुरानी दुनिया का ज़रूर विनाश होना है। बाप दूर देश के रहने वाले पराये देश में आए हैं नई दुनिया स्थापन करने। पुरानी सो नई, नई सो पुरानी ज़रूर बननी है। नई को सतयुग, पुरानी को कलियुग कहा जाता है। बाप है ही सच्चा सोना। सच ही कहने वाला। उनको ट्रूथ कहते हैं। सभी कुछ सत्य बताते हैं। यह जो कहते हैं कि ईश्वर सर्वव्यापी है वो सब झूठ है। अब बाप कहते हैं झूठ ना सुनो। सी नो ईविल... भक्ति करते–2 बन्दर मिसल बन गए हैं। बाप के लिए यह झूठ ही झूठ बताते हैं। राजविद्या की बात अलग है। वो तो है ही अल्प काल के सुख लिए। दूसरा जन्म लेकर फिर नए सिर पढ़ना पड़े। वो है अल्पकाल का सुख। यह है 21 जन्म, 21 पीढ़ी के लिए। पीढ़ी बुढ़ापे को कहा जाता ...। वहाँ कब (अकाले) मृत्यु नहीं होती। यहाँ तो देखो कैसे अकाले मृत्यु होती रहती है। गर्भ में भी मर जाते हैं। तुम अभी काल पर जीत पहन रहे हो। जानते हो वो है अमरलोक। यह है मृत्युलोक। वहाँ तो जब बूढ़े होते हैं तो सा० होता है कि हम तो जाकर बच्चा बनेंगे। बुढ़ापा पूरा होगा और हम यह शरीर छोड़ेंगे। नया शरीर मिले वो तो अच्छा ही है ना। बैठे–2 खुशी से शरीर छोड़ देते हैं। यहाँ तो उस अवस्था में रहते शरीर छोड़ने लिए मेहनत लगती है। यहाँ की मेहनत वहाँ पर कामन हो जाती है। यहाँ देह सहित जो कुछ भी है सबको भूल जाना है। अपने को सिर्फ आत्मा समझना है। इस पुरानी दुनिया को छोड़ना है। आत्मा सतोप्रधान थी तो सुन्दर शरीर मिला। फिर काल(काम) चिक्षा पर बैठ कर तमोप्रधान, सांवरे हो गए तो शरीर भी सांवरा मिला। सुन्दर से श्याम बन गए। कृष्ण का नाम तो कृष्ण ही है, फिर भी उनको श्याम–सुन्दर क्यों कहते हैं? चित्रों में भी कृष्ण का चित्र सांवरा बना देते हैं; परन्तु अर्थ नहीं समझते हैं। अब तुम समझते हो कि सतोप्रधान थे तो सुन्दर थे। अब तमोप्रधान श्याम बने हैं। सतोप्रधान को पुरुषोत्तम कहा जाता है। तमोप्रधान को कनिष्ट कहेंगे। बाप तो एवरप्योर ही है। वो आते हैं हसीन बनाने। मुसाफिर है ना। कल्प–2 आते हैं, नहीं तो पुरानी दुनिया को नया कौन बनावे। यह तो पतित, छी–2 दुनिया है। इन बातों को दुनिया में कोई नहीं जानते। अभी तुम जानते हो कि बाप हमको पुरुषोत्तम बनाने के लिए पढ़ा रहे हैं। हम फिर से सो देवता बनने लिए हम सो ब्राह्मण बने हैं। हम शूद्र थे। अब फिर ब्राह्मण बने हैं। तुम हो संगमयुगी ब्राह्मण। दुनिया यह नहीं जानती कि अब संगमयुग है। शास्त्रों में लाखों वर्ष कल्प की आयु लिख दी है। वो समझते हैं कि कलियुग तो अजन बच्चा है। अब तुम दिल में समझते हो कि हम यहाँ आए हैं उत्तम ते उत्तम कलियुग पतित से सतयुगी पावन मनुष्य से देवता बनने लिए। ग्रंथ में भी महिमा है मूत पलीती कपड़ धोये; परन्तु (ग्रंथ) पढ़ने वाले भी अर्थ नहीं समझते हैं। खुद मूत पलीती है और बैठकर गुरुनानक ...

इस समय तो बाप आकर सारी दुनिया के मनुष्य मात्र को साफ करते हैं। तुम उस बाप के सामने बैठे हो। बच्चों को समझाया है कि रचता और रचना की नॉलेज को कोई जानते ही नहीं हैं। बाप ही ज्ञान का सागर है। वो सत है, चेतन है, अमर है, पुनर्जन्म रहित है। शांति का सागर, पवित्रता का सागर, सुख का सागर है। उनको ही बुलाते हैं कि आकर यह वर्सा दो। तुमको अभी बाप 21 जन्मों के लिए वर्सा दे रहे हैं। यह है अविनाशी पढ़ाई। पढ़ाने वाला भी अविनाशी बाप है। आधा कल्प तुम राज्य पाते हो फिर रावण राज्य होता है। आधा कल्प है राम राज्य, आधा कल्प है रावण राज्य। तुम बच्चों को अब यह निश्चय है कि तुम्हारा प्राणों से प्यारा वो पारलौकिक बाप है। प्राण आत्मा को कहा जाता है। मनुष्य मात्र उनको याद करते हैं; क्योंकि वो आकर दुख से छुड़ा कर सुख में ले जाते हैं। तो प्राणों से प्यारा हुआ ना। आधाकल्प के दुखों से छुड़ाकर सुख–शांति देने वाला बाप है। तुम जानते हो सतयुग में हम सदा सुखी रहेंगे। बाकी सब शांतिधाम में चले जावेंगे। फिर रावण राज्य में दुख शुरू होता है। दुख और सुख का खेल है। मनुष्य समझते हैं कि यहाँ ही अभी सुख है, यहाँ ही अभी दुख है; परन्तु नहीं। तुम जानते हो स्वर्ग अलग है, नर्क अलग है। स्वर्ग की स्थापना बाप राम करते हैं, नर्क की स्थापना रावण करते हैं, जिसको ही वर्ष–2 जलाते हैं; परन्तु क्यों जलाते हैं, वो कौन है, यह कुछ भी नहीं जानते हैं। बड़े–2 महाराजाएँ, प्रेसिडेंट, प्राइममिनिस्टर आदि सब जैसे कि वेवकेप(बेवकूफ) है। दशहरे पर क्या–2 बैठ बनाते हैं। कितना खर्चा करते हैं। समझते कुछ भी नहीं है। कितनी कहानियाँ बैठ सुनाते हैं। राम की सीता भगवती को रावण ले गया। मनुष्य भी स..... हैं हाँ, ऐसा हुआ होगा। अभी तुम समझते हो कि कितने नॉनसेंस हैं। किसको भी नहीं जानते। ना शिवबाबा को, ना ब्र०वि०शं० की बायोग्राफी को जानते हैं। इसको ही कहा जाता है अंध(श्रद्धा)। अभी तुम सबका ऑक्युपेशन जानते हो। यह तुम्हारी बुद्धि में नॉलेज है। सारे वर्ल्ड की हिस्ट्री–जाग्राफी को कोई भी मनुष्य नहीं जानते हैं। (बाप) ही जानते हैं। उनको वर्ल्ड का रचता भी नहीं कहेंगे। वर्ल्ड तो है ही। बाप सिर्फ आकर नॉलेज देते हैं कि यह चक्र कैसे फिरता है। भारत में इन ल०ना० का राज्य था। फिर क्या हुआ? देवताओं से कोई ने लड़ाई की क्या? कुछ भी नहीं। आधा कल्प बाद वाममार्ग शुरू होने से देवताएँ वाममार्ग में चले जाते हैं। बाकी ऐसे नहीं कि युद्ध में कोई से हारे। लश्कर आदि की कोई बात नहीं। ना लड़ाई से राज्य लेते हैं, ना गंवाते हैं। यह तो योग में रह पवित्र बन पवित्र राज्य तुम स्थापन करते हो। बाकी हाथ में कोई चीज़ नहीं। यह है डबल अहिंसक। एक तो पवित्रता की अहिंसा। दूसरों को तुम दुख नहीं देते यह दूसरी। सबसे बड़ी हिंसा है काम विकार की, जो ही आदि–मध्य–अंत दुख देती है। रावण के राज्य में ही दुख शुरू होता है। बीमारियाँ शुरू हो जाती हैं। कितनी ढेर बीमारियाँ हैं। अनेक प्रकार की दवाइयाँ निकलती हैं। रोगी बन गए हैं ना। तुम इस योगबल से 21 जन्मों लिए निरोगी बनते हो। वहाँ दुख वा बीमारी का नाम–निशान नहीं रहता। इसलिए तुम पढ़ रहे हो। बच्चे जानते हैं कि भगवान हमको पढ़ाकर भगवान–भगवती बना रहे हैं। पढ़ाई भी कितनी सहज है। आधे–पौने घंटे में सारी नॉलेज समझा देते हैं। 84 जन्म भी कौन–2 लेते हैं यह भी तुम्हीं जानते हो। तुम जानते हो भगवान हमको पढ़ाते हैं। वो है ही निराकार। सच्चा–2 नाम उनका शिव है। कल्याणकारी है ना। सर्व का कल्याणकारी, सर्व का सद्गति दाता है। ऊँच ते ऊँच बाप ऊँच ते ऊँच मनुष्य बनाते हैं। बाप पढ़ा कर होशियार बना कर अब कहते हैं जाकर पढ़ाओ। इन ब्रह्मा कु.कु. को पढ़ाने वाला शिवबाबा है। ब्रह्मा द्वारा तुमको एडॉप्ट किया है। प्रजापिता ब्रह्मा कहाँ से आया? इस बात में ही मूँझते हैं। इनको एडॉप्ट किया? कहते हैं बहुत जन्मों के भी अंत... अब बहुत जन्म किसने लिए? इन ल०ना० ने ही पूरे 84 जन्म लिए हैं। इसलिए कृष्ण के लिए कह देते हैं श्याम–सुन्दर। हम सो सुन्दर थे फिर दो कला कम हुई। कला कम होते–2 अब नो कला बन गए हैं।

अब तमोप्रधान से सतोप्रधान कैसे बने? बाप कहते हैं पतित–पावन में ही हूँ, मुझे याद करो तो तुम पावन बन जावेंगे। यह भी जानते हो यह रुद्र ज्ञान यज्ञ है। अब यज्ञ में चाहिए ही ब्राह्मण। तुम सच्चे ब्राह्मण हो सच्ची गीता सुनाने वाले। इसलिए तुम लिखते भी हो सच्ची गीता पाठशाला। तुम सिद्ध कर बताते हो कि और सब हैं झूठी गीता पाठशालाएँ। गीता में नाम ही बदल दिया है। यह भी जानते हैं जिन्होंने भी कल्प पहले वर्सा लिया है वो ही आकर लेंगे। अपने ही दिल से पूछो हम पूरा वर्सा ले सकेंगे। यह तुम्हारी 21 जन्मों के लिए कमाई है। वो नकली कमाई साथ तो नहीं चलनी है। मनुष्य मरते हैं तो हाथ खाली ही जाते हैं। तुम शरीर छोड़ेंगे तो हाथ भरतू। बाकी सब हाथ खाली जावेंगे। सारी कमाई कहीं मिट्टी में ही मिल जावे इससे तो हम क्यों ना सारी कमाई ट्रान्सफर कर शिवबाबा को दे देवें। जो बहुत दान करते हैं तो वो दूसरे जन्म में बहुत साहुकार बनते हैं। ट्रांसफर करते हैं ना। अभी तुम 21 जन्मों लिए नई दुनिया में ट्रांसफर करते हो। तुमको रिटर्न में 21 जन्मों लिए मिलता है। वो तो एक जन्म लिए अल्पकाल लिए ट्रांसफर करते हैं। तुम तो ट्रांसफर करते हो 21 जन्मों के लिए। बाप तो है ही दाता। यह ड्रामा में नूंध है। जो जितना करते हैं वो उतना पाते हैं। वो इनडायरैक्ट दान करते हैं तो अल्पकाल लिए मिलता है। यहाँ है डायरैक्ट, जिसका रिटर्न तुमको 21 जन्मों लिए मिलता है। अभी सब कुछ नई दुनिया में ट्रांसफर करना है। इनको देखो कितनी बहादुरी की है। तुम कहते हो सब कुछ ईश्वर ने दिया है। अभी बाप कहते हैं वो सब कुछ हमको दो। हम तुमको विश्व की बादशाही देते हैं। बाबा ने तो फट से दे दी। किवाया(छुपाया) नहीं। फुल पावर दे देते हैं। हमको विश्व की बादशाही मिलती है वो नशा चढ़ गया। बच्चों आदि का कुछ भी ख्याल नहीं किया। देने वाला ईश्वर है तो फिर जिम्मेवारी थोड़े ही रही किसी की भी। अभी देखो सब साहुकार है। तो तुम्हारा है 21 जन्मों लिए ट्रांसफर करना। तुम भी जानते हो हम आए हैं बाप से बादशाही लेने। दिन–प्रतिदिन समय कम होता जावेगा। आफतें तो ऐसी–2 आवेगी जो बात मत पूछो। व्यापारियों का तो श्वांस मुठी में रहते हैं। कहीं कोई जमघट ना आ जावे। सिपाह का मुँह देखा तो बेहोश हो जाते हैं। आगे चलकर बहुत तंग करेंगे। सोना आदि कुछ भी रखने नहीं देंगे। बाकी तुम्हारे पास क्या रहेगा। पैसे ही ना रहेंगे जो कि कुछ खरीद कर खा सको। न..... आदि भी चल नहीं सकेंगे। राज्य बदल जाता है ना। पिछाड़ी में बहुत दुखी होकर मरते हैं। बहुत दुखों के बाद फिर बहुत सुख होगा। यह है खूने नाहक का खेल। नैचरल कैलेमिटीज़ भी होंगे। इससे पहले बाप से वर्सा तो पूरा लेना चाहिए। घूमो–फिरो। सिर्फ बाप को याद करो तो पावन बन जावेंगे। बाकी आफतें तो बहुत आवेंगी। हाय–2 करते रहेंगे। तुमको तो एक ही शिवबाबा की याद रहनी है। अंत में शिवबाबा की याद में रहकर ही शरीर छोड़ देंगे। और किसी भी मित्र–संबंधी आदि की याद नहीं आवे। अंतकाल बाप को ही याद करना है और नारायण बनना है। यह प्रैक्टिस बहुत करनी पड़े, नहीं तो बहुत पछताना पड़ेगा। और की याद आई तो नापास हो गए। जो पाव(पास) होंगे वो ही विजयमाला में पिरोये जावेंगे। अपने से ही पूछना चाहिए हम बाप को कितना याद करते हैं। कुछ भी हाथ में होगा तो वो अंतकाल में याद आ जावेगा। हाथ में नहीं होगा तो याद भी नहीं आवेगा। बाप कहते हैं हमारे पास कुछ भी नहीं है। यह हमारी चीज़ नहीं है। यह तो खत्म हो जाती है। इसलिए एक बाप को ही याद करते हैं। अल्फ और बे। बस, यही प्रैक्टिस करनी है। गृहस्थ व्यवहार में तो रहना ही है। कन्याएँ तो फ्री है। उनको नौकरी तो करनी नहीं है। उस नॉलेज के बदली में यह लो तो 21 जन्मों का वर्सा मिल जावेगा। नहीं तो स्वर्ग की बादशाही ... गंवा देंगे। तुम यहाँ आते ही हो बाप से वर्सा लेने लिए। पावन तो ज़रूर बनना पड़े। श्रीमत पर चलेंगे तो कृष्ण को गोद में लेंगे। कहते हैं ना कृष्ण जैसा पति मिले वा बच्चा मिले। तुमको सा० भी होता है बाललीला आदि का। फिर कई उसको जादू समझ लेते हैं। कोई अच्छी रीति समझ लेते हैं, कोई फिर उल्टा–सुल्टा उठाते हैं। गुडमॉर्निंग।